किसान और गरीब भगवान

एक जापानी लोककथा

किसान और उसका परिवार उस गरीब भगवान से, जो उनके घर की परछत्ती में रहते हैं, दूर चले जाना चाहता है. सूर्योदय से पहले ही वह सब चले जायेंगे और फिर वह गरीब नहीं रहेंगे.

लेकिन घर छोड़ कर वह जा नहीं पाते. अपने गरीब भगवान में उन्हें एक ऐसी प्रचुरता मिली जो उन्हें कहीं ओर न मिल सकती थी.

इस जापानी लोककथा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जिस वस्तु की हम खोज रहे होते हैं कई बार वह वस्तु हमें अनपेक्षित जगहों में मिल जाती है.

किसान और गरीब भगवान

एक जापानी लोककथा
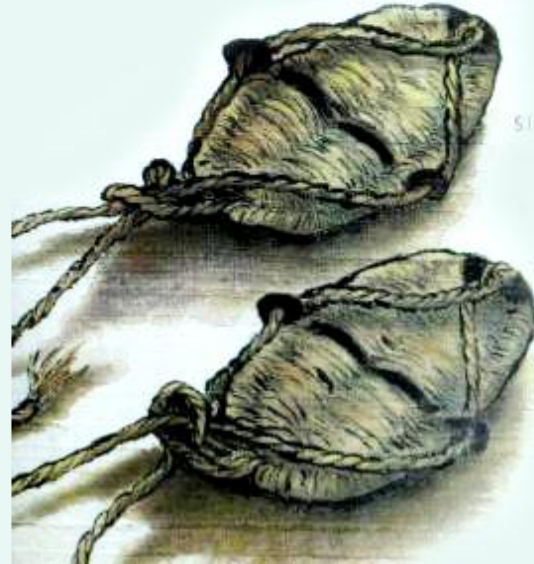
कई वर्ष पहले, जापान के ऊंचे पहाड़ों में स्थित अपने घर में, एक गरीब किसान अपने परिवार के साथ रहता था. उसे ऐसा लगता था कि जितनी मेहनत वह करता था उतना ही वह गरीब हो जाता था. लेकिन यह सत्य न था, क्योंकि अकसर वह अपने ख्यालों में खोया रहता था और कभी भी कड़ी मेहनत न करता था.
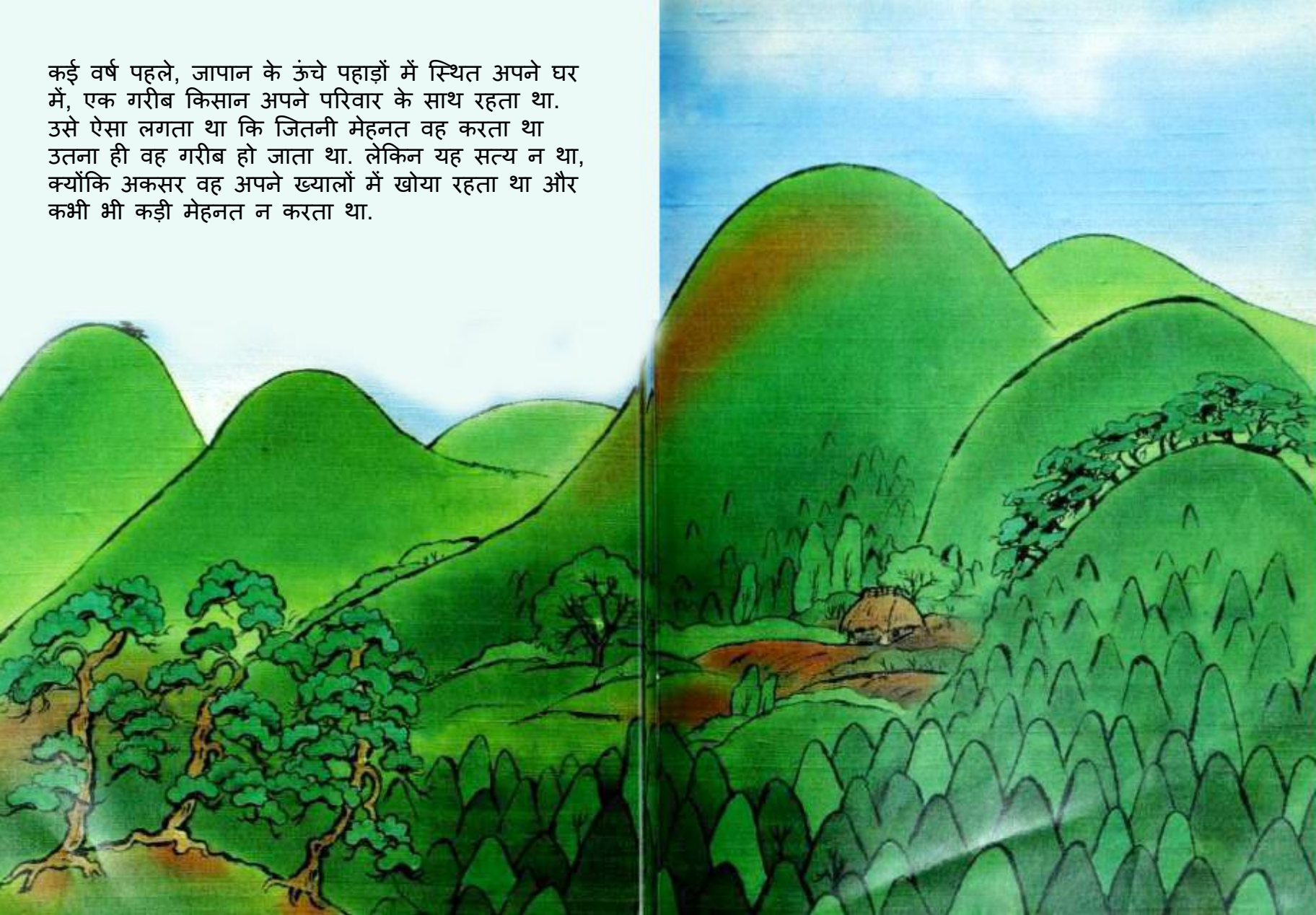
उसे लगता था कि उसकी गरीबी बढ़ने के साथ-साथ उसके बच्चों की संख्या भी बढ़ रही थी. यह भी सत्य नहीं था. उसके सिर्फ चार बच्चे थे. लेकिन किसान और उसकी पत्नी इतने दुःखी रहते थे कि उनके बच्चे दिनभर लड़ते-झगड़ते, चीखते-चिल्लाते रहते थे. इस कारण ऐसा लगता था कि वहां बहुत सारे बच्चे थे.

एक रात किसान ने पत्नी से शिकायत करते हुए कहा, "हम इतने गरीब हैं कि हमारा भगवान भी गरीब ही होगा."

इस विषय में किसान सत्य ही कह रहा था. उनकी छोटी-सी झोंपड़ी की परछत्ती में गरीब भगवान रहते थे. और जैसे की गरीब भगवान होते हैं, वह भगवान बहुत दयालु थे. उन्हें वह किसान अच्छा लगता था.

धूल और मकड़ी के जालों से भरी हुई परछत्ती में बैठ कर नीचे खेलते हुए बच्चों का शोर-शराबा सुनना उन्हें पसंद था. लेकिन वह गरीब भगवान थे और गरीब भगवान् से दूर रहना ही अच्छा होता है. गरीब भगवान, बिम्बोगैमी, दुर्भाग्य ही लाते हैं. हर कोई जानता है की अगर बिम्बोगैमी किसी को मिल जायें तो वह व्यक्ति कभी भी धनवान नहीं बन सकता.

पत्नी ने कहा, "मुझे लगता है कि तुम ठीक कह रहे हो. अगर हम कहीं ओर चले जाएँ तो हमारा जीवन सुधर जाएगा. हमारे जीवन में भी कुछ उन्नति होगी. आधी रात के समय जब गरीब भगवान् सो रहे होंगे, हम यहाँ से चले जायेंगे. उन्हें पता न लगेगा कि हम जा चुके हैं. हम उनसे और अपने दुर्भाग्य से मुक्त हो जायेंगे."

किसान ने अपनी पत्नी को गले लगाया और ख़ुशी से नाचने लगा. अंततः उसे पता चल ही गया कि वह गरीब था लेकिन यह उसकी गलती न थी. "यह अच्छा विचार है," उसने कहा. "पहाड़ों के ऊपर सूर्य दिखाई देने से पहले ही, हम बहुत सवेरे चल देंगे."
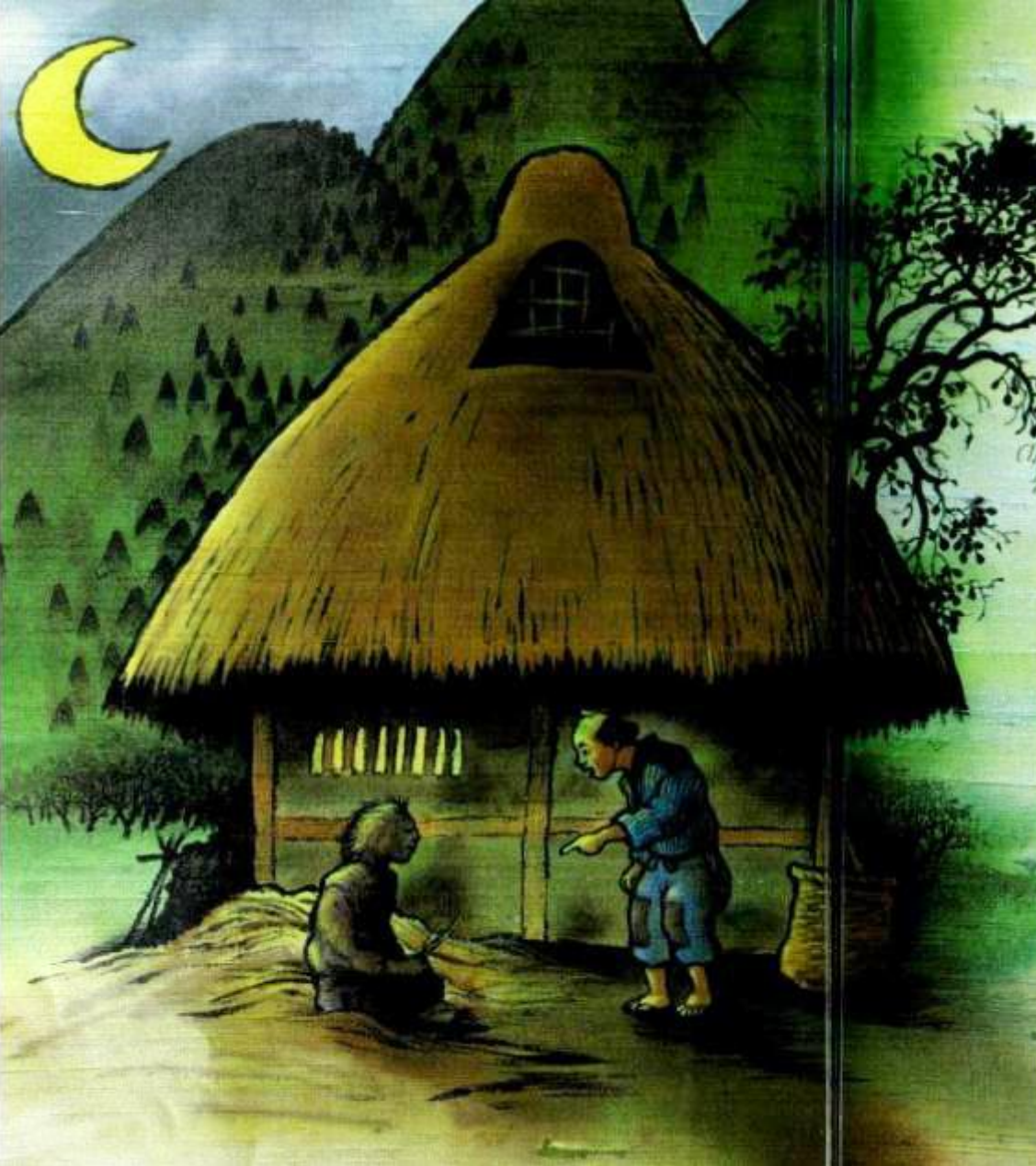
उन्होंने अपना सामान एक थैले में समेट लिया. फिर गद्दा बिछा कर दोनों ने सोने का प्रयास किया. लेटे-लेटे किसान कल्पना करने लगा कि गरीब भगवान से मुक्त होने के उपरान्त उनका जीवन कैसा होगा. शायद उसे किसी बड़ी जागीर में ओवरसियर का काम मिल जाए. फिर वह अन्य किसानों को बतायेगा कि उन्हें क्या काम करना था. या फिर शायद वह एक समुराई बन जाए, एक ऐसा बहादुर, निष्ठावान योद्धा, जो किसी सामंत के परिवार और ज़मीन की रक्षा करेगा. अपने भावी जीवन को लेकर किसान इतना उत्तेजित हो गया कि वह सो न पाया. बिना कोई शोर किये हुए वह उठा ताकि उसकी पत्नी की नींद न टूट जाए. वह बाहर आ गया. वहां चाँद के प्रकाश में उसने एक अजनबी को चप्पलें बनाते देखा.

"तुम कौन हो? तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" किसान ने पूछा.

"मैं वही गरीब भगवान हूँ जो तुम्हारे घर की परछत्ती में रहता है. मैंने सुना कि तुम दूसरे गाँव जा रहे हो. इसलिए तुम्हारी यात्रा की लिए मैं चप्पलें बना रहा हूँ."

किसान ने अपने पाँव धरती पर पटके, पहले एक पाँव फिर दूसरा.

फिर वह चिल्लाने लगा-वह इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि उसकी पत्नी जाग गई.

"श्रीमती, श्रीमती, यह हैं हमारे गरीब भगवान. यह जानते हैं कि हम यहाँ से जा रहे हैं. यह हमारे पीछे आने की सोच रहे हैं. हम कभी भी इनसे और अपने दुर्भाग्य से दूर न जा पाएंगे!" पत्नी ने उसे दिलासा देने का प्रयास किया. लेकिन कोई लाभ न हुआ. सारी रात वह विलाप करता रहा.
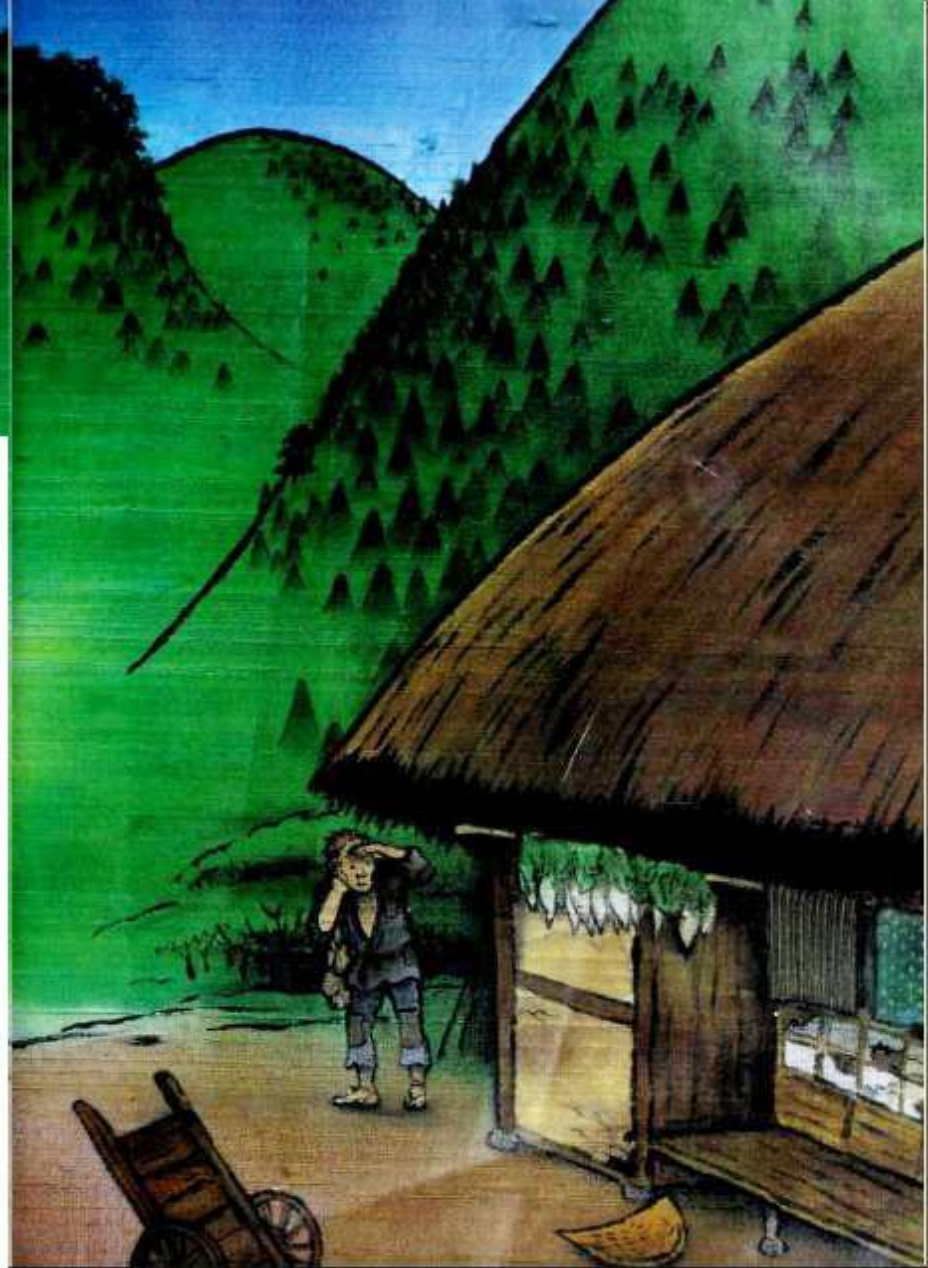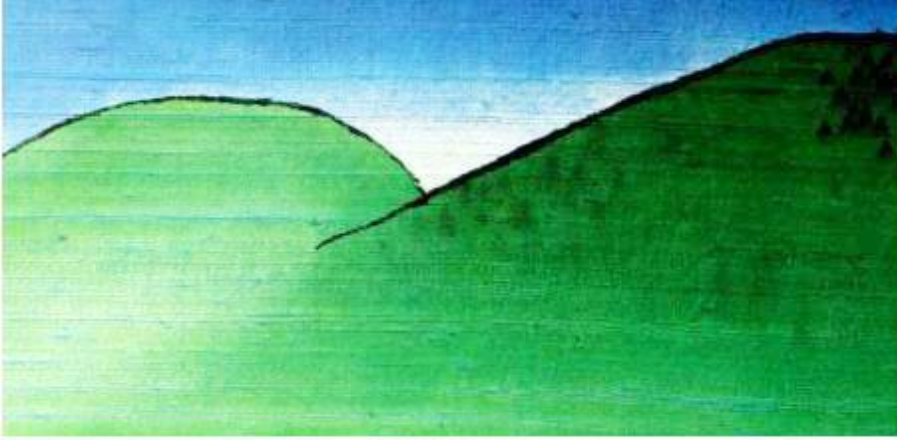
सुबह तक गरीब भगवान चप्पलें बनाते हुए उनकी प्रतीक्षा करते रहे. उन्होंने छह जोड़ी चप्पलें बना ली थीं, क्योंकि घास की बुनी चप्पलें जल्दी खराब हो जाती हैं. और यद्यपि कोई यात्रा न होने वाली थी, गरीब भगवान चप्पलें बुनते रहे. उन्हें लगा कि घास का छोटा-सा ढेर लेकर चप्पलों जैसी उपयोगी वस्तु बनाना एक अच्छा कार्य था.

उस दिन बीच-बीच में किसान के बच्चे खेलना बंद कर देते और गरीब भगवान को घास के साथ काम करते हुए देखने लगते. उन्हें देखते समय बच्चे बिलकुल शोर न करते. उन्होंने हर बच्चे के लिए एक जोड़ी चप्पल बनाई. सारा दिन और सारी रात गरीब भगवान घर के निकट बैठे रहे और चप्पलें बनाते रहे. अगली सुबह बारह जोड़ी चप्पलें और बन गईं. उन्होंने उन चप्पलों को इकट्ठा बाँध कर घर की छत से लटका दिया.

दूसरे दिन उन्हें एक जगह गहरे लाल रंग की घास मिली. जब उस घास को पीले रंग की घास के साथ मिलाकर चप्पलें बनाईं, तो चप्पलें बहुत सुंदर बनीं.
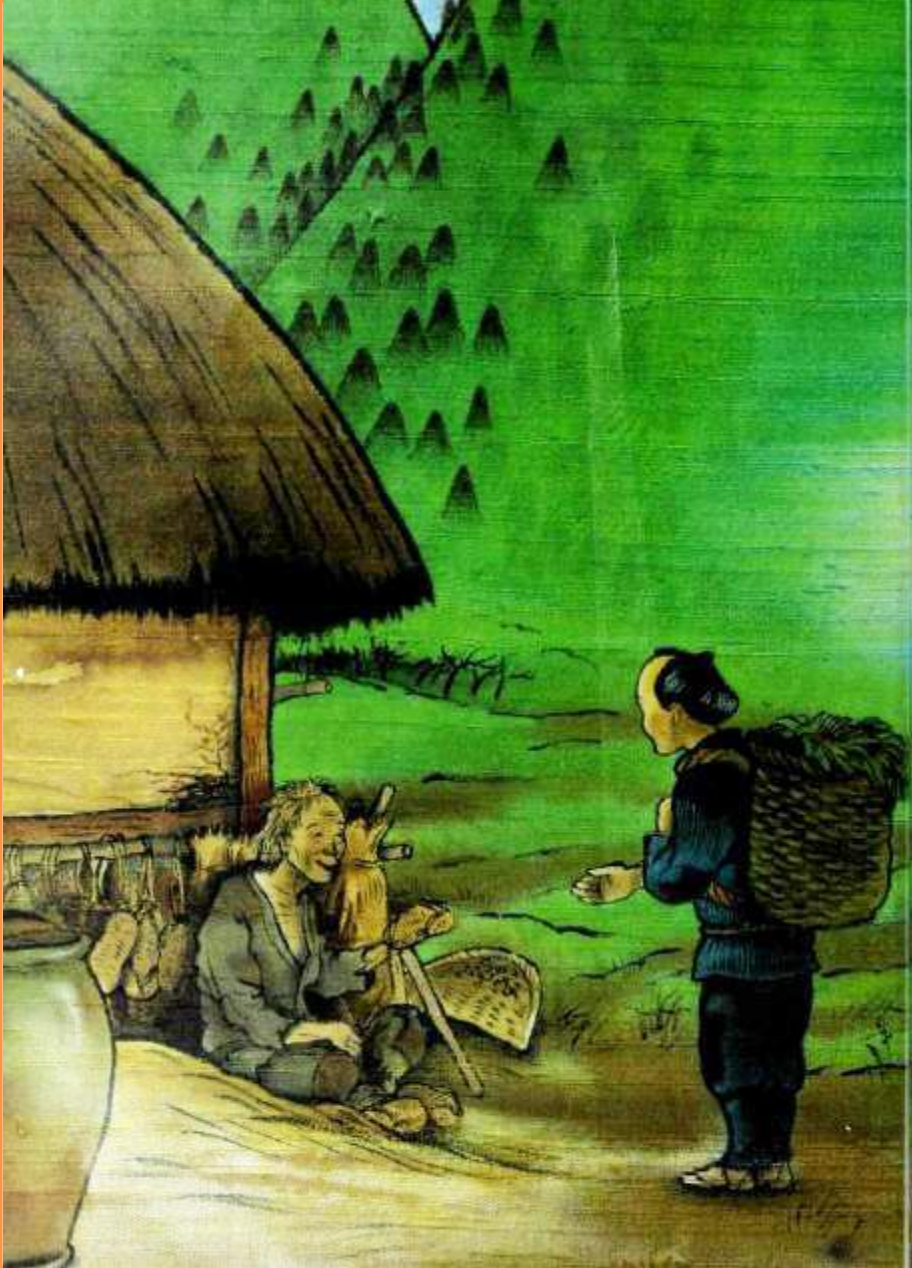
कई दिनों तक ऐसा ही हुआ.
किसान और उसकी पत्नी दुःखी रहे.
बच्चे खेलते और झगड़ते रहे.
और गरीब भगवान चप्पलें बनाते रहे. यह सब चप्पलें मज़बूत थीं और उस धान के डंठलों से बनीं थीं जिसे किसान अपने खेत में उगाता था. गरीब भगवान ने यह भी जान लिया कि घास को कैसे गहरा नीला रंगा जा सकता था. उन्होंने पीले, लाल, और नीले रंगों की घास से सुंदर चप्पलें बनाईं.
एक दिन गाँव से एक व्यक्ति उस रास्ते से जा रहा था. उसने गरीब भगवान का काम देखा. "श्रीमान, यह चप्पलें जो आप बना रहे हैं बहुत सुंदर हैं."
"धन्यवाद," गरीब भगवान ने कहा, उन्होंने ऐसे प्रिय शब्द आजतक न सुने थे. "मेरे पास बहुत चप्पलें हैं. कृपया एक जोड़ी आप ले लें और अपनी पत्नी को दें."
उस यात्री ने गरीब भगवान को धन्यवाद कहा और एक जोड़ी चप्पलें ले लीं

अगले सप्ताह एक और यात्री झोंपड़ी के पास से गुज़रा.
“श्रीमान, मैंने आपकी चप्पलों के विषय में अपने पड़ोसी से सुना था. उसने कहा था कि आपकी चप्पलें मज़बूत तो हैं ही, सुंदर भी हैं.”
“धन्यवाद, महाशय,” गरीब भगवान ने कहा. “यह चप्पलें अपनी पत्नी और बच्चों के लिए ले जाएँ.”
किसान की पत्नी ने यह बातें सुन लीं और अपने पति को सब बताया. उसने दुःखी होना बंद कर दिया और बाहर आकर गरीब भगवान से कहा, “यह चप्पलें लोगों को ऐसे ही न दें. लोगों से कहें की इनका मूल्य एक बोरी धान है.”

गरीब भगवान को लगा कि यह एक अच्छा सुझाव था. अगले दिन जब दो ग्रामीण वहां आये तो उन्होंने एक-एक जोड़ी चप्पलें लीं और एक-एक बोरी धान दे गये.
तीसरे दिन एक अन्य ग्रामीण ने एक जोड़ी चप्पलें खरीदीं. एक बोरी धान के बजाये वह एक मुर्गा दे गया. घर के भीतर से किसान सब देख रहा था. उसने सोचा कि अगर मैं यह सारी चप्पलें गाँव ले जाऊं तो शायद में कई जोड़े बेच पाऊं.

अगली सुबह किसान की पत्नी ने सारी चप्पलें एक बंडल में बाँध दीं. किसान ने वह बंडल अपनी पीठ पर लाद लिया. जब वह रात में लौटा तो अपने साथ वह खाने के लिए छह मुर्गे, पत्नी के लिए खाना पकाने के लिए एक नया बर्तन और हर बच्चे के लिए एक-एक मिठाई लाया था. एक भी चप्पल न बची थी, सब बिक गईं थी.

"गरीब भगवान, आपको हमारे लिए और चप्पलें बनानी चाहियें," किसान ने कहा.

"मैं बनाऊँगा," गरीब भगवान ने कहा, "लेकिन तुम्हें अपने धान के खेत से बहुत सारी घास लाकर देनी पड़ेगी."

किसान और उसके परिवार ने वही किया जो गरीब भगवान ने उसे कहा था. शीघ्र ही घास काटने, घास को अलग-अलग रंगों से रंगने, गरीब भगवान की सहायता करने और बेचने के लिए चप्पलों को गाँव ले जाने में वह सब बहुत व्यस्त हो गये. वह सब इतने व्यस्त रहने लगे कि उन्होंने इस बात की ओर ध्यान ही न दिया कि उनका जीवन बदल रहा था.

अब घर में सब के लिए पर्याप्त खाना होता था और किसी को भूखा न रहना पड़ता था.

अपने माता-पिता के साथ काम करते हुए बच्चे खेतों में ही खेला करते थे. वह चिल्लाते और हंसते, और यहाँ-वहाँ दौड़ते. परन्तु किसी को न लगता था कि वह बहुत शोर मचाते थे. उसकी पत्नी, जो हर समय चिंतित रहती थी, अब काम करते-करते गीत गाया करती थी और कभी-कभी खूब जोर से हंसती भी थी.

किसान ने भी चप्पलें बनाना सीख लिया. और आश्चर्य की बात तो यह थी कि किसान के रूप में जो आदमी इतना सुस्त था, वही चप्पलें बनाने वाला कुशल कारीगर निकला. वह इतनी सुंदर चप्पलें बनाता था कि उसकी चप्पलों को पाँव में पहनने के बजाय उन्हें दीवार पर टांगने का तुम्हारा मन करता.
लेकिन गरीब भगवान् के लिए तो बदलाव और भी आश्चर्यजनक था.
अकसर गरीब भगवान दुबले-पतले होते हैं क्योंकि उन्हें भूख लगी रहती है और फटीचर हालत में होते हैं क्योंकि वह गरीब होते हैं और कोई उन्हें प्यार नहीं करता क्योंकि...क्योंकि...क्यों, क्योंकि वह गरीब होते हैं.
लेकिन किसान के गरीब भगवान थोड़ा गोलमटोल हो रहे थे. उनके फट्टे हुए कपड़े अब सिले हुए होते थे और उनकी धूल से भरी परछत्ती अब साफ़ हुआ करती थी. और सबसे अजीब बात तो यह थी कि किसान का परिवार अब उन्हें प्यार करने लगा था. गरीब भगवान जानते थे कि अब उन्हें कहीं ओर चले जाना चाहिए ताकि फुकुनोकमी, जो सौभाग्य के भगवान हैं, उस घर में आ सकें और किसान का परिवार सच में धनी बन सके.
शोगात्सू, नववर्ष, जापान में सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार होता है. इस वर्ष, शोगात्सू के आगमन पर, किसान के परिवार ने अपनी छोटी झोंपड़ी की खूब सफाई की. नववर्ष का स्वागत करने के लिए उन्होंने बढ़िया खाना पकाया. किसान को पूरा विश्वास था कि नये वर्ष में वह सच में धनी बन जाएगा.

ऐसी परम्परा है कि आधी रात के समय पुजारी मंदिर का पीतल का बड़ा घड़ियाल बजाता है. वह धीरे-धीरे उसे 108 बार बजाता है. जैसे-जैसे घड़ियाल की आवाज़ घाटी में चारों ओर फैलती जाती है लोग अपने-अपने घरों के दरवाज़े खोल कर नववर्ष का स्वागत करते हैं.

लेकिन जैसे ही घड़ियाल बजना शुरू हुआ, किसान के घर में गरीब भगवान अलविदा कहने के लिए परिवार के सामने प्रकट हुए.

उसकी पत्नी, जो अब हर समय गीत गाती रहती थी, रोने लगी. और बच्चे, जो अब एक दूसरे के साथ बिलकुल न झगड़ते थे और हर समय माता-पिता की आज्ञा का पालन करते थे, उनकी टांगों से लिपट गये. “आप क्यों जा रहे हैं?” वह रोने लगे. “हम आपको प्यार करते हैं.”

“मुझे जाना ही होगा. अगर मैं नहीं जाऊँगा तो तुम कभी भी धनी न बन पाओगे. देखो, यह हैं धनी भगवान् जो मेरी जगह यहाँ रहने आये हैं.”

और सच में घर के खुले दरवाज़े के पास धनी भगवान् खड़े थे. उनके मांसल चेहरे पर मुस्कान थी. उन्होंने रत्न-जड़ित किमोनो पहन रखा था. उन्होंने गरीब भगवान का हाथ पकड़ कर खींचा. “जल्दी करो,” उन्होंने आदेश दिया. “नववर्ष के आने से पहले ही तुम्हें चला जाना चाहिये. अब यह मेरा परिवार है. मैं इन्हें धनी बनाने के लिए आया हूँ.”

धनी भगवान ने गरीब भगवान् को एक ओर खींचा और किसान के बच्चों ने गरीब भगवान को दूसरी ओर खींचा. किसी ने पानी से भरा मटका फेंका और इतना हो-हल्ला और शोरगुल हुआ कि किसान को चिल्ला कर अपनी बात कहनी पड़ी.

“रुको,” किसान, जो अब एक गुणी कलाकार बन गया था, चिल्लाया. सब शांत हो गये. सिर्फ घंटियों की आवाज़ और किसान की सशक्त वाणी सुनाई दे रही थी.

उसने कहा, “मेरा ख्याल था कि मैं सच में धनी बनना चाहता था. लेकिन अब मेरे घर में हंसी है, संगीत है. हर दिन मैं सुंदर कलाकृतियाँ बनाता हूँ. हम तो पहले ही धनी बन चुके हैं.”

और किसान की बात पूरी होते ही सब ने मिलकर धनी भगवान को धकेल कर झोंपड़ी से बाहर निकाल दिया और दरवाज़ा बंद कर लिया. तभी मन्दिर की घंटियाँ बजनी बंद हो गईं. उन्होंने गरीब भगवान को गले से लगाया. अपने सौभाग्य का उत्सव मनाने के लिए सब स्वादिष्ट व्यंजन खाने बैठ गये.

अगले कई वर्षों तक किसान और उसके परिवार ने चप्पलों की हज़ारों जोड़ियां बनाईं. चप्पलों की हर जोड़ी उससे पहले बनाई गई जोड़ी से अलग और अधिक सुंदर होती थी. बच्चे बड़े हुए, उनका विवाह हुआ. उन्होंने निकट ही अपने लिये घर बना लिये और उनके बच्चे बाहर आँगन में खेलते.

और हर नववर्ष की पूर्व संध्या पर किसान का सारा परिवार उसके आसपास इकट्ठा हो जाता और वह उन्हें चप्पलों की और उस गरीब भगवान की कहानी सुनाता जो उसके घर की परछत्ती में रहते थे. "गरीब भगवान का परछत्ती में रहना हमारे लिये अच्छा ही है," वह कहता, "पता नहीं उनके बिना हमारे साथ क्या होता!"

गरीब भगवान हमेशा चुप रहते और कुछ समय उपरान्त तो किसान के परिवार ने उन की कोई आवाज़ भी न सुनी. वह सदा से शर्मीले थे, परिवार ने फिर शायद ही उन्हें देखा. ऐसा नहीं है कि वह कहीं चले गये थे. बस कुछ समय उपरान्त वह किसी को दिखाई नहीं दिए. एक दुर्लभ पक्षी के गीत के समान, वह गीत जो बस कुछ पल सुनाई देता है. तुम उस गीत को फिर सुनने का भरसक प्रयास करते हो पर कुछ सुन नहीं पाते. तब तुम्हें संदेह होता है कि क्या सच में कोई पक्षी गीत गा रहा था या फिर वह गीत तुम्हारे मन की एक कल्पना भर थी.

समाप्त